Str. 480, 88. Calc. Ausg. समास्सदः ।

Str. 481, 90. Calc. Ausg. समास्सिचिंत, D. ebenfalls संचित् st. संसत्, die Scholien wie wir. — 91. Calc. Ausg. und die Handschriften: परिषत् st. पर्षत् — Calc. Ausg. und D. गान्नास्था।

Str. 482, 92. Die Scholien: मैड्रिता प्रि। निमित्तनेमित्तिकाविप (sic)।

Str. 484, 97. Calc. Ausg. und D. वर्णिको। — Die Scholien: लि-विकरें। प्रि। — 98. Schol. लिखितापि। Calc. Ausg. लीपिर. — 1. Calc. Ausg. und D. मशी st. मधी, die Scholien: मधित व्हिनस्त्या- इडवत्त्यं मधिः।

Str. 485, 2. Die Scholien: कुले बिणाग्वृन्दे ग्रेष्ठवमस्य कुलग्रेष्ठी।

Str. 486, 5. Calc. Ausg. und D. स्याद् st. च। — 6. Calc. Ausg. und D. प्राशक: st. पाशक: । Calc. Ausg. पाशको st. प्राप्तको । Die Scholien: पायते (1. पाश्यते) वध्यते ४नेन पासकः (sic)। प्रास्यते चिप्यते ४नेन प्राशकः (sic)।

Str. 487, 8. Calc. Ausg. म्रष्टापदं। — Die Scholien: शार्रिफलको जिए। — 10. Schol. वामद्विणया: शार्रीणां समस्तो नयनं समसात्प्रा-पणम् तस्य नामकम्

Str. 488, 12. Calc. Ausg. und D. म्रहितुएडकः । E. म्रोहितुएडकः । Die Scholien wie wir. — 13. Die Scholien : मनोतव इत्यन्ये । यद्याडिः ।

ातनः पितृसधर्मा यं (sic) स तातार्ही मनोतवः ।

Str. 489, 17. Calc. Ausg. Ste Scholien wie wir.

Str. 490, 18. Die Scholien: म्रस्ति पर्लाक: पुगयं पापमिति मित-रस्य म्रास्तिक: । अवस्तिक अप अर — स्थापनित मित-

Str. 491, 22. Calc. Ausg. प्रणाद्यो, B. E. प्राणाद्यो, D. प्रणाद्यो प्रमन्तो, B. प्रसमंतो । Die Scholien: स्वभावत: सामान्यता प्रनभीष्टना-